

य

1. य pron. relat. nom. m. यस्, f. या, nom. acc. n. यद्; die übrigen Casus regelmässig nach der pronom. Declination, गाणा सर्वादि zu P. 1, 1, 27. Vor. 3, 9, 56. Am Anfange eines comp. यद्, z. B. यत्कण्ठे, यन्माया Spr. 2277. यच्छ्रेः काथास. 18, 71. यत्सदशी 54, 166. यद्वीर्यं, यत्पराक्रम adj. MBh. 1, 3691. 8302. यत्सेन, यच्छील, यत्स्वभाव, यद्वल adj. 5, 2724. यदा-र्षेयो यज्ञमानः Ind. St. 10, 90. यज्ञामन् HARIV. 9970. Einfluss auf den Ton des verbi finiti VS. PAṬ. 6, 14. P. 8, 1, 66. 1) wer, welcher: य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो ज्ञनः । तेषां सं क्लेशो अनापि RV. 7, 55, 6. 2, 12, 9. 7, 6, 6. 49, 3, 4. 8, 3, 23. AV. 6, 84, 1. 12, 1, 5. मरुतो यद् वो बलं ज्ञौ अ-चुच्यवीतन so v. a. pro robore vestro RV. 1, 37, 12. अयतो येन दोषेणा मृत्युर्विप्रान् जिघांसति M. 5, 3, R. 1, 8, 5. आचक्ष्व यद्दत्तं द्रव्यमवशिष्टं च यद्दम् MBh. 3, 2276. ज्ञायतामस्य यद्दुःखम् BRĀHMAN. 1, 10. एक एव मुक्त्वा इमो निधने ऽप्यनुयाति यः M. 8, 17. ये — सर्वे ते 2, 86. सा भार्या या अचिर्दत्ता सा भार्या या पतिव्रता Spr. 5223. M. 2, 167. 234. यस्ते युद्धमयं दयं कामं च व्यपनाशयेत् । सो ऽहं जातः MBh. 3, 7090. यः — असौ M. 4, 170. Spr. 2433. H. 344. Śāh. D. 216, 2. यद् — अस्य Spr. 5417. यस्य — एतम् MBh. 3, 15700. यद् — एतद् R. 1, 60, 5. Spr. 2337. यः — स एषः MBh. 3, 15707. यम् — अयं सः 2430. fg. यद् — इदं तद् Çāk. 186. यद् — तदिदम् 27. यः — तादृशः Spr. 4908. 4186. यद्वयमि तथा कुरु MBh. 1, 5965. एष एव — यः TAHT. Up. 2, 3. एते — ये M. 9, 257. इदं तद् — यद् Çāk. 67, 23. इद-ग्विज्ञानम् — येन KATHĀS. 96, 31. mit Fehlen des erwarteten demonstr. : सूर्येणा क्यभिनिसुक्तः शयानो ऽभ्युदितश्च यः । प्रायश्चित्तमकुर्वीषो युक्तः स्या-न्मरुतैरसा ॥ M. 2, 221. 3, 191. 4, 158. 8, 313. 10, 8. MBh. 3, 2656. 2778. 5, 7079. R. 1, 53, 17. Spr. 1696. 2416. 2692. 2975. 3699. 4617. अन्धः श-त्रुकुलं गच्छेद्यः साक्ष्यमनृतं वेदेत् M. 8, 93. 94. 9, 91. öfters fehlt auch das erwartete relat. : अन्धकं कुञ्जकं चैव कुष्ठाङ्गं व्याधिपीडितम् । आपद्गतं च भर्तारं न त्यजेत्सा मरुतासती ॥ Spr. 3494. 4071. 4335. 4353. MBh. 11, 40. BRĀG. P. 1, 5, 38. Zwei und mehr Rel. in demselben Satze: यस्मि-न्नह्नि यदहः प्रदिश्यते ÇĀKṆH. Çā. 14, 1, 2. यः करोति वृत्तो यस्य स तस्य-त्विगिकोद्यते M. 2, 143. 149. 174. 3, 22. 193. यो यज्जपति तस्य तत् 7, 96. 8, 158. यदेव रोचते यस्मै भवेत्तस्य मुद्गरम् Spr. 683. 2392. 2442. यस्य यावांश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती 2444. 2541. 2559. येन यावान्यथा-धर्मो धर्मो वेदुः समीहितः । स एव तत्फलं भुङ्क्ते तथा तावदमुत्र वै ॥ 2503. यो ऽस्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतास्तरम् 2532. यो यथा नित्तिपेद्धस्ते य-मर्थं यस्य मानवः । स तथैव ग्रहीतव्यः M. 8, 180. Ein oder mehrere Sub-jecte durch das Rel. zu einem Satze erweitert und dadurch hervorge- hoben: यस्त्वं कथं वेत्थ ब्रह्मबन्धविति wie weisst du Etwas? AIR. Ba. 7, 27. यो रामस्तमचिन्तित् WEBER, RĀMAT. Up. 298. तस्मादेतत्परं मन्ये य-ज्ज्ञतोऽस्य साधनम् M. 12, 99. तत्रियस्य तु धर्मो ऽयं यद्युद्धम् MBh. 5, 7300. रेतःशोणितयोरियं परिणतिर्यद्दुर्गम् Spr. 2641. यन्मरणं सो ऽस्य विश्वासः 2646. KATHĀS. 17, 46. मा भूत्स कालो यत्कष्टम् R. 2, 85, 9. यच्च काममुखं लोके यच्च दिव्यं मरुत्सुखम् । एते Spr. 4759. BHAG. 6, 21. पृष्ठमीसादनं त-द्यत्परोक्षे दोषकीर्तनम् H. 268. 149. आत्मपरित्यागेण यदाश्रितानां रक्षायां तन्नीतिविदां न संमतम् Hir. 13, 12. fg. 30, 17. fg. 31, 8. neutr. sg. auch in Verbindung mit Wörtern andern Geschlechts und anderer Zahl: परो-

VI. Theil.

तमिवैष ब्रह्मणो रूपमुपनिगच्छति यत्तत्रियः AIR. Ba. 7, 31. तत्रं वा एत-द्वनस्पतीनां यध्यधोधः ebend. यज्ञ उ क् वा एष प्रत्यन्तं यद्वत्सा 26. प्रजा-पतेर्वा एषा क्षेत्रा यद्वावस्तोत्रीया 6, 2. ÇAT. Ba. 1, 2, 2, 5. 8, 2, 11. 3, 3, 2, 25. असिधारात्रतमिदं मन्ये यदरिणा सक्तु संवासः PĀNĀT. 106, 15. Spr. 2183. BRĀG. P. 6, 1, 1. प्रकाशमेतत्तास्कर्यं यदेवनसमाह्वयौ M. 9, 222. ए-तावानेव पुरुषो यज्ज्ञापात्मा प्रजेति क् 45. यत्तातिः समये श्रुतिः शिव शि-वेत्युक्तिः u. s. w. असौ सन्मुक्तिमार्गं स्थितिः Spr. 2279. यदेतत्स्वाच्छ-न्याद्विक्रणामकार्यण्यमशनं सकृपिः संवासः u. s. w. न ज्ञाने कस्येषा परि-णतिरुदारस्य तपसः Spr. 4821. Ein solches यद् lässt sich durch was — betrifft wiedergeben; eben so in den folgenden Stellen: पुत्रव्यसनं दुःखं यदेतन्मम संप्रतम् । एवं त्वं पुत्रशोकेन राजन्कालं करिष्यसि ॥ DAÇ. 2, 52. तद्यदवशो न तदवकल्पते AIR. Ba. 6, 2. Bisweilen wird ein auf diese Weise erweitertes Subject andern Subjecten angereicht, ohne dass ein be-sonderer Nachdruck auf ihm läge, aus rein metrischen Rücksichten: अन्धो जडः पीठसर्पि सतत्या स्वविरश्च यः । श्रोत्रियेषूपकुर्वश्च न दाप्याः केनचि-त्करम् ॥ M. 8, 394. तीव्रः खेदश्च दाक्षश्च तदा ग्लानिश्च या परा । समाविवेश मोक्षश्च R. 4, 60, 14. Auffallender ist, dass sogar ein Object in einen sol-chen relativen Satz aufgelöst und andern Objecten ohne Weiteres an- gereicht wird: सर्वावसानपेक्षितं कृतानं च तिलैः सक्तु । अश्विनो लवणं चैव पशवो ये च मानुषाः ॥ M. 10, 86. आशाव्याशास्वप्यथात्मानम् u. s. w. अ-च्येत् तस्य दित्तु मायाविद्ये ये कलापारतन्त्रे WEBER, RĀMAT. Up. 323. इन्द्रि-याणां पृथग्भावमुदयास्तमयो च यत् । पृथगुत्पद्यमानानाम् KATHOP. 6, 6. ohne च so v. a. nämlich: ततो देवा एतं वज्रं ददृशुः । यदपः ÇAT. Ba. 1, 1, 4, 17. Das Rel. in Verbindung mit andern Pronomm.: यस्य ते RV. 7, 3, 4. यं त्वां 8, 43, 27. यो ऽयम् ÇAT. Ba. 1, 7, 2, 3. MBh. 3, 2568. fg. यमिमम् RV. 10, 86, 4. यं त्विमं धर्मम् Spr. 4835. येयम् KATHĀS. 18, 69. P. 3, 3, 135. Sch. यदिदम् — अनेन R. 1, 59, 4. एष मे हृदि संकल्प्यो यदिदं कथितं म-या MBh. 3, 7374. यानिमान् 1, 5980. यो ऽसौ M. 1, 7. MBh. 3, 2906. 16812. R. GORR. 2, 49, 26. VER. in LA. (III) 7, 14. असौ तु यस्तिष्ठति MBh. 3, 15593. fg. 15595. fg. ये ऽमी Spr. 2317. स यः ÇAT. Ba. 14, 9, 2, 1. स य एषः 3, 9, 2, 7. 11, 7, 2, 1. यः सः — सः Śāh. D. 216, 8. यत्तद् M. 1, 11. Spr. 4769. य एषः ÇAT. Ba. 11, 7, 2, 1. MBh. 3, 15701. 15711. fg. यदेतद् M. 1, 71. 6, 82. MBh. 1, 6041. Spr. 2379. य एते M. 3, 200. BHAG. 1, 23. Beson- dere Beachtung verdienen folgende Verbindungen: a) mit dem relat. य wer —, welcher —, was immer: यया यद्यद्दति ततद्भवति ÇAT. Ba. 14, 4, 2, 27. KĀT. Çā. 24, 4, 26. LĪT. 3, 1, 9. 5, 11, 15. यं यं क्रतुमधीते ÅÇV. GRH. 3, 4, 6. 1, 14, 8. M. 2, 236. 3, 231. 275. 8, 48. उच्यते यदि यद्दीनं त-त्तदेव प्रोक्तं 9, 40. MBh. 3, 2202. 11499. 13, 126. BHAG. 10, 41. कामा-न्यस्य यस्येप्सितान्यथा R. 1, 53, 1 (54, 1 GORR.). Spr. 2318. 2387. 2818. 4769. 4829. 4893. 5026. Çāk. 141. 150. KATHĀS. 18, 247. ÇĪÇ. 3, 16. Śāh. D. 217, 10. Hir. 40, 9. यो यो यावत्तियशेषो स स तावद्गुणः स्मृतः M. 1, 20. येन येन तु भावेन यद्यद्दानं प्रपच्छति । तत्तत्तेनैव भावेन प्राप्नोति प्रतिपूजि-तः ॥ 4, 234. 12, 58. MBh. 13, 346. BHAG. 7, 21. — b) mit dem demonstr. त beliebig, gleichviel wer, — welcher: यस्मात्तस्मात्प्रतिप्रकृतम् M. 4, 191. यस्य तस्य (यस्यां तस्यां v. l.) प्रसूनः Spr. 2429. कर्मणा येन तनैव 3878.